दोनो हाथ उलीचों

श्री सतीश कुमार कश्यप
संदेशवाहक

भरे नाव में नीर उचित है दोनो हाथ उलीचो

बाहर उजले मन के काले बातो से भोले जंचते
पग पग पर निन्दा करते दलवन्दी में जो फंसते

द्ववेष कलह कटुता का गला दबाकर भींचो
भरे नाव में नीर उचित है दोनो हाथ उलीचों

झगड़ों से अवकाश निकालो पुन : परस्पर प्रीत बढ़ाओं
प्रबल युक्ति और शक्ति से संभलो कुछ कर्त्तव्य निभाओं

करें संगठन भंग उसी का कान पकड़कर खींचो
भरे नाव में नीर उचित है दोनो हाथ उलीचों

घोर अवधि अन्धकार ने अपना डेरा डाला
फैला दो मिलकर जगती में वेद ज्ञान उजिलाया

इस वैदिक फुलवारी को सब मिलजुल करके सींचो
भरे नाव में नीर उचित है दोनो हाथ उलीचों

कहे सतीश कश्यप का जीवन तभी सफल होगा
मरूथलीय में फूल खिलेंगे, बहता गंगा जल होगा

सरस्वती के पग चिन्हों पर दौड़े विश्व समूचो
भरे नाव में नीर उचित है दोनो हाथ उलीचों

****